प्रार्थना का उत्तर न मिलने के कारण

''तुम मांगते हो और पाते नहीं'' (याकूब 4:3क)। यह बात कई बार सत्य हो चुकी है! कई लोगों का परमेश्वर पर से विश्वास इसलिए उठ गया क्योंकि उन्होंने जिन वस्तुओं के लिए प्रार्थना की वे उन्हें नहीं मिलीं। दूसरे लोगों को इसी कारण परमेश्वर पर संदेह हुआ। प्रार्थना का उत्तर न मिलने के लिए परमेश्वर को दोष देना आवश्यक नहीं है। देखा जाए तो इसका कोई न कोई तर्कसंगत समाधान रहता ही है। अनुत्तरित प्रार्थनाओं के क्या कारण हैं?

क्या प्रार्थना करने वाले में प्रार्थना करने की योग्यता नहीं है?

किसी व्यक्ति के प्रार्थना करने के अयोग्य होने की बात हो सकती है। पहले यदि प्रार्थना करने वाला परमेश्वर का बालक नहीं है तो यह सत्य है। सभी आत्मिक आशिषें मसीह में ही मिलती हैं (इफिसियों 1:3)। मसीह के बाहर कोई आत्मिक आशीष देने की प्रतिज्ञा नहीं की गई अर्थात उसे परमेश्वर की संतान के रूप में प्रार्थना करने का अधिकार नहीं है। लिखा है, ''जो अपना कान व्यवस्था सुनने से फेर लेता है, उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है'' (नीतिवचन 28:9)। निश्चय ही, यह बात उन लोगों के लिए सत्य है जो घृणित पाप करते हैं, परन्तु यह उनके लिए भी सत्य है जिनका नैतिक चरित्र तो अच्छा है परन्तु वे मसीह से बाहर हैं।

इस नियम का अपवाद कुरनेलियुस जैसा व्यक्ति होगा (प्रेरितों 10:1-48), जिसने सच्चाई में अगुआई के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की थी। परमेश्वर ने उसके पास सुसमाचार सुनाने के लिए पतरस को भेजकर उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया।

दूसरा, हो सकता है कि किसी ने पहले कभी सुसमाचार को ग्रहण किया हो, परन्तु अब उसका जीवन मसीही न हो। हो सकता है कि वह परमेश्वर की संगति से बाहर चला गया हो। धर्मी जन की प्रार्थना से ''बहुत कुछ हो सकता है'' (याकूब 5:16)। परमेश्वर के भटके हुए बालक के लिए आवश्यक है कि वह प्रार्थना करने के अधिकार को पाने से पहले

पश्चात्ताप करे (प्रेरितों 8:22)।

हमारी प्रार्थनाएं अक्सर दूसरों के प्रति गलत विचार होने के कारण रुक जाती हैं। हमें चाहिए कि हम अपने पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना उतनी ही करें जितना हम अपने विरुद्ध पाप करने वालों को क्षमा करते हैं (मत्ती 6:12)। यीशु ने समझाया कि परमेश्वर के सामने भेंट चढ़ाने से पहले अपने भाई से मेल करना चाहिए (मत्ती 5:24)। पतरस ने कहा है कि पतियों को अपनी पत्नियों का आदर करना चाहिए ताकि उनकी ''प्रार्थनाएं रुक न जाएं'' (1 पतरस 3:7)।

यदि परमेश्वर की ओर से किसी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिलता, तो यह इसलिए हो सकता है कि प्रार्थना विश्वासी हृदय से नहीं की गई। कई बार हो सकता है कि हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर इसलिए न मिले क्योंकि हमने उत्तर की अपेक्षा ही नहीं की थी! हमारी प्रार्थनाएं विश्वास से भरी होनी चाहिए। ''विश्वास से मांगिए।'' संदेह में रहने वाला व्यक्ति ''समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है'' (याकूब 1:6)। प्रार्थना सुस्त, आधे मन से या उदासीन होकर नहीं, बल्कि दृढ़ता से की जानी चाहिए (याकूब 5:16)। परमेश्वर से बात करना ''प्रार्थना कहने'' से कहीं बढ़कर है।

क्या प्रार्थना परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है?

प्रार्थना का उत्तर न मिलने के कारण की हमारी खोज में, दूसरा प्रश्न जिस पर विचार किया जाना चाहिए वह यह है कि क्या प्रार्थना परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है? यूहन्ना ने लिखा है, ''यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है'' (1 यूहन्ना 5:14ख)।

क्या हम किसी ऐसी वस्तु के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जो हमारे लिए हानिकारक है? यदि ऐसा है, तो परमेश्वर अवश्य ही ऐसी प्रार्थना का उत्तर नहीं देगा। वह हमें ऐसी वस्तु प्रदान नहीं कर सकता जिसके विषय में वह जानता है कि वह हमारे हित में नहीं होगी। हमें चाहिए कि परमेश्वर के वचन को जानने के लिए अध्ययन करें ताकि हम उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करने के योग्य हो जाएं। बहुत से लोगों को परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप प्रार्थना करना कठिन लगता है क्योंकि वे उसकी इच्छा को बहुत कम जानते हैं।

क्या प्रार्थना का उद्देश्य गलत है?

याकूब ने ग्रहण योग्य प्रार्थना की सम्भावित रोक के लिए उद्देश्य की बात की थी: ''तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोगविलास में उड़ा दो'' (याकूब 4:3)। यदि प्रार्थना स्वार्थ के लिए की जाती है, तो इसका उद्देश्य सही नहीं है। परमेश्वर से किसी वस्तु के लिए प्रार्थना करते समय हमें अपने आप से पूछना चाहिए, ''मैं यह प्रार्थना क्यों कर रहा हूं?'' ऐसा करके, हमें बहुत सी अनुत्तरित प्रार्थनाओं के कारण का पता चल सकता है।

सारांश

प्रार्थनाओं का उत्तर न मिलने पर किसी व्यक्ति को सबसे पहले परमेश्वर को दोष देने के लिए ही उकसाया जा सकता है, परन्तु सम्भावनाएं दूसरी ही हैं। अपने आपको और अपनी प्रार्थनाओं को जांचिए। प्रार्थना करने के अपने उद्देश्यों को जांचिए। यदि व्यक्ति, उसकी प्रार्थनाएं और उद्देश्य ग्रहण योग्य हैं, तो परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर अवश्य देगा। वह अपनी इच्छा और जो आपके लिए सबसे अच्छा है, उसके अनुसार ही प्रार्थना का उत्तर देगा।

''हे प्रभु ... हमें प्रार्थना करना सिखा दे'' (लूका 11:1)।

जीवित पत्रियां बनना

मसीही लोग जीवित पत्रियां हैं (2 कुरिन्थियों 3:2)। लोग हमें पढ़ते हैं। कई लोग मसीही कहलाने वाले लोगों के जीवनों के अलावा धार्मिक क्षेत्र में किसी अन्य बात को नहीं पढ़ते। इस तथ्य की रोशनी में, यहां कुछ विचार स्मरण रखने के लिए दिए गए हैं।

आप एक जीवित पत्री हैं। आप मसीही हों या न हों, परन्तु आप पर यह बात सत्य है। जब लोग आपको देखते हैं, तो उन्हें एक संदेश मिलता है। जो लोग अपने आपको तुच्छ और अलक्षित समझते हैं, जिन्हें लगता है कि प्रभु के लिए वे कुछ नहीं कर सकते, उनके लिए यहां एक सबक है। *हर कोई* दूसरों पर अपना प्रभाव छोड़ता है।

आपका प्रभाव या तो अच्छा है या बुरा। जब लोग आपको देखते हैं तो उन्हें एक अच्छा या बुरा संदेश पढ़ने को मिलता है; उन पर आपका इन दोनों में से एक प्रभाव तो पड़ता ही है। ''जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में हैं'' (मत्ती 12:30) यीशु ने घोषणा की थी। जिसका अच्छा प्रभाव नहीं है उसका बुरा प्रभाव अवश्य है। क्या आप कलीसिया के लिए शक्तिशाली प्रभाव रखते हैं ?

आप अपना प्रभाव खो नहीं सकते। हो सकता है कि आपका अच्छा प्रभाव खो जाए, परन्तु आपका बुरा प्रभाव रह ही जाएगा। आप कहीं भी क्यों न चले जाएं, दूसरों को प्रभावित करने के लिए आप अपना प्रभाव छोड़ ही जाएंगे। यदि आप प्रभाव देने से बचने का प्रयास करेंगे, तो वह कार्य अपने आप ही दूसरों पर आपका यह प्रभाव छोड़ जाएगा।